हिन्दी उर्दू, उर्दू हिन्दी और भारतेन्दु की भूमिका

डॉ मधूलिका मिश्र*

प्राचीनतम के पोषक, नवीनता के उन्नायक, वर्तमान के व्याख्याता और भविष्य के द्रष्टा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी के साथ–साथ उर्दू की भी श्रीवृद्धि की है। भारतेन्दु युग के लेखकों ने हिन्दी के साथ उर्दू में भी पर्याप्त मात्रा में लिखा है। इस युग के हिन्दी व उर्दू साहित्य ने हिन्दू–मुस्लिम एकता स्थापित की।

हिन्दी से भिन्न एक स्वतन्त्र भाषा के रूप में उर्दू का प्रयोग कब से होने लगा, यह एक विवादास्पद प्रश्न है। अंग्रेजी राज्य और उसकी शिक्षा व्यवस्था ने सम्भवतः हिन्दी से अलग भाषा के लिए उर्दू का प्रयोग किया। बाद में विभिन्न राजनीतिक दलों ने हिन्दी उर्दू के अलगाव को सुदृढ़ बनाया।

उर्दू का सर्वप्रथम प्रयोग गिलक्रिस्ट ने किया है। टी0 गैह्म बेली ने अपने एक लेख 'उर्दू दि नेम ऐन्ड दि लैंग्वेज' में लिखा है – As we do not know the date of Mushaji's lines we must admit that Giechist may have been the first person who in literature used Urdu as the name of language (Urdu the name and the language जर्नल ऑव दि रायल ऐशिऐटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट–ब्रिटेन ऐन्ड आयर्लेन्ड–अप्रैल–1930) टी0 ग्रह्म बेली ने ही यह भी लिखा है कि 18वीं सदी में और उससे पहले हिन्दी, कभी हिन्दवी शब्द कर व्यवहार होता था फारसी–अरबी से भिन्न दिल्ली की भाषा के लिए खुसरों ने हिन्दवी शब्द का प्रयोग किया है। सैय्यद एहतेशाम हुसेन ने अपने उर्दू साहित्य के इतिहास (पृष्ठ–24) पर लिखा है, "लगभग 18वीं सदी के अन्त तक उर्दू शब्द का प्रयोग भाषा के शब्द के अर्थ में नही मिलता है।" इस प्रकार उर्दू हिन्दी से बलग नहीं, केवल हिन्दी की एक शैली मात्र है। भारतेन्दु युग में हिन्दी और उर्दू दोनों रूपों में खड़ी बोली का प्रयोग होता था। इसी सत्य को ध्यान में रखते हुए राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द और उर्दू को मिलाने का प्रयत्न किया।

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गोविन्द वल्लभपंत पी0जी0 कालेज, प्रतापगंज जौनपुर।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र और बालमुकुन्द गुप्त की उर्दू रचनाओं को उनकी हिन्दी ग्रन्थावली में समानान्तर स्थान प्राप्त है। फारसी लिपि में लिखा हुआ दकनी का साहित्य हिन्दी भाषा का साहित्य माना जाता है। इस प्रकार हिन्दी और उर्दू का सम्बन्ध प्राचीन है। भारतेन्दु युग में वे दोनों एक ही भाषा की शैलियाँ थीं।

ऐसी स्थिति में मन की मौज के अनुसार लेखक किसी भी शैली को चुनकर उसमें अपने भाव व्यक्त कर सकता था। इसी रूप के भारतेन्दु जी ने उर्दू भाषा को भी अपने भाव प्रकाशन का माध्यम बनाया। यह अवश्य था कि उस युग में सामान्य जनता की समस्त साहित्यिक विरासत देवनागरी लिपि में सुरक्षित थी। इसीलिए उन्होंने देवनागरी का प्रचार किया। देवनागरी के साथ फारसी लिपि और फारसी मिश्रित हिन्दी का भी चलन था। भारतेन्दु जी ने भाषा की इस स्थिति को स्वीकार किया और उसके अनुरूप लिखा। उनके लिए उर्दू हिन्दी एक शैली थी।

भारतेन्दु जी ने अपना तन–मन–धन हिन्दी की उन्नति के लिए अर्पित किया, परन्तु अपनी अरबी–फारसी से उन्हें अनुराग कम नही था। उन्होंने एक मुशायरा भी किया। 'रसा' नाम से वे शायरी किया करते थे–

दोस्तों कौन मेरी तुर्बत पर
रो रहा है रसा रसा करके।

उन्होंने चुनी हुई गजलों का संग्रह 'गुलजारे पुरबहार' छपवाया। इसमें भारतेन्दु जी की कई गजलें हैं और उर्दू की रचनायें देवनागरी लिपि में छपी हैं, जिससे भाषागत एकता कायम हुई। 'गुलजारे पुरबहार' की पहली गजल इस प्रकार है–

जहाँ देखो वहाँ मौजूद मेरा कृष्ण प्यारा है।
उसी का सब है जलवाः जो जहाँ में आशकारा है।।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी मृत्यु से एक वर्ष पूर्व सन् 1884 में 'पंचपवित्रात्मा' नामक निबंध संग्रह निकाला था। इसमें "महात्मा मुहम्मद, बीबी फातिमा आदरणीय अली की मृत्यु का समाचार, इमाम हुसैन–निबंधों के रूप में पाँच पवित्र आत्माओं की जीवनी लिखी गयी थी।" इस प्रकार भारतेन्दु जी ने हिन्दू–मुस्लिम दोनों को जागृत किया।

भारतेन्दु जी ने 'कुरान–शरीफ' का हिन्दी अनुवाद करना प्रारम्भ किया था, सम्भवतः यह पूरा नहीं हो पाया। 'कवि वच सुधा' में उसके प्रकाशन की विज्ञप्ति छपी थी। शिवनन्दन सहाय ने कुरान–शरीफ का स्वरूप अनुवाद तथा कुरान के सर्व पर्व और उसके विषय और आयतों की संख्या आदि का एक चक्र देखा था। (सचिव हरिश्चन्द्र – पृ0 233)

कासिद!

सातएँ दिन आवैगा!!

नये हितकारी और समाचार कहैगा!!

यह एक साप्ताहिक उर्दू पत्र निकलैगा इसमें अनेक हित की, नये उद्‌गार की, साम्प्रत समयानुसार लोक बुद्धि की और अनेक शुभ–समाचार की बातैं रहैंगी–

यह पत्र बहुत उत्तम बड़े–बड़े पृष्ठों में स्वच्छ अक्षरों में छपेगा, मूल्य 10/–रुपये वार्षिक।

हरिश्चन्द्र

उद्यमकर्ता

भारतेन्दु जी का 'खुशी' नामक एक लम्बा निबंध है, जो भारतेन्दु ग्रन्थावली के तीसरे खंड मै संकलित है। इसकी शैली उर्दू है इसमें देवनागरी लिपि में उर्दू का प्रयोग किया गया है। भारतेन्दु जी ने अपने नाटकों और लेखों में उर्दू का प्रयोग हमेंशा किया है।

राधाकृष्णन दास की जीवनी में रामचन्द्र शुक्ल ने हरिश्चन्द्र के दो पत्रों का उल्लेख किया है, जिससे यह प्रतीत होता है कि हरिश्चन्द्र के घर में भी उर्दू का प्रयोग होता था।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने शिक्षा कमीशन के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा था कि, "में हिन्दी, संस्कृत, उर्दू आदि का कवि हूँ।" (शिव नन्दन सहाय सचित्र हरिश्चन्द्र पृ0 313) उर्दू का कवि होना उनके लिए गर्व की बात थी।

उस प्रकार भारतेन्दु जी ने उर्दू के विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। आज साम्राज्य विरोधी राजनीतिक दलों ने दोनों को अलग–अलग कर दो भाषाओं का रूप दे दिया है। साम्राज्य की एकता और जन–सामान्य के प्रति सहानुभूति हिन्दी और उर्दू को मिला सकती है। अतः हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू साहित्य भी भारतेन्दु का चिर ऋणी है।

सन्दर्भ ग्रंथ–

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और नवजागरण की समस्याएँ
–डॉ राम विलास शर्मा
2. भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा
–डॉ राम विलास शर्मा

****